ISSN 2231-1629
Knowledge Resonance

IMPACT FACTOR 8.072

July – December 2021- Vol. 10 No. 2

गोंदिया जिल्हे के मागासवर्गिय जनसंख्या का चिकित्सक अध्ययन

डॉ. बी. के. जैन

भुगोल विभागप्रमुख

एम. बी. पटेल महाविदयालय, सालेकसा

सारांश

जनगणना 2011 के अनुसार भारत मे अनुसूचित जनजाती की सख्या 10.45 करोड है। तथा जनजातियोकीं प्रतिशत जनसंख्या देश कि कुल जनसंख्या 8.6 प्रतिशत है। तथा कुल ग्रामीण जनसंख्या 11.5 प्रतिशत है। अनूसुचित जनजाती के पुरूषो की जनसंख्या 5.25 करोड तथा अनुसूचित जनजाती की महिलाओं की जनसंख्या 5.20 करोड है। देश अनुसूचित जाती जनजाती के जनसंख्या का केंद्रीय स्थान बना हुआ है। भारत मे कुल 354 आदिवासी जमात वास्तव्य करती है, जिसमे गोंड, भिल्ल संस्थाल इत्यादी जमात मुख्य समाजसे विभक्त होकर दूर के पर्वतीय, अतिदुर्गम पहाडो तथा जंगलो मे वास्तव्य करती है। महाराष्ट्र के कुल जनसंख्या के 9.8 प्रतिशत जनसंख्या यह अनुसूचित जाती जनजाती की है। इसमे से गोंदिया जिले मे यहा प्रतिशत 14.97 प्रतिशत इतना है। ईस क्षेत्र मे आदिवासी समाज की अनुसूचित जाती एंव जनजाति की जनसंख्या अधिक है। और जनसंख्या का प्रतिशत निरंतर बढ रहा है। गोंदिया जिले में अनुसूचित जाति की जनसंख्या 13.3 प्रतिशत एवं अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या 16.2 प्रतिशत इतनी है आदिवासी शब्द दो शब्दों आदि और वासी से मिलकर बना है आदिका शाब्दिक अर्थ प्रारंभ या शुरू होता है यंव वासी शब्द का अर्थ निवास करने वाला होता है अर्थात जो प्रारंभ से इस क्षेत्र या इस प्रदेश में शुरुआत से ही निवास करता हो अर्थात उन्हें अनुसूचित जाती एंव जनजाती या मूलनिवासी कहा जाता है। यहा मुख्यता देवरी, आमगाव, सालेकसा, तिरोडा, सडक अर्जुनी, मोरगाव अर्जुनी, तथा सडक अर्जुनी तालुका मे आदिवासी समाज अधिक विस्तारित है।

अध्ययन क्षेत्र में आदिवासियों को दो वर्गों में अधिसूचित किया गया है– अनुसूचित जनजाति और अनुसूचित आदिम जनजाति। जिले में कुल अनुसूचित जाती की जनसंख्या 175961 है जिसमे 49.69 प्रतिशत पुरुषो की तो 50.31 प्रतिशत महिला की जनसंख्या है। इसी प्रकार अनुसूचित जनजाति की कुल जनसंख्या 214253 है जहा पुरुषों की जनसंख्या का प्रतिशत 49.45 तो स्त्री जनसंख्या का प्रतिशत 50.55 इतना है। जिले के कुल जनसंख्या मे मागासवर्गीय जाती की जनसंख्या का प्रतिशत यह 13.3 तथा अनुसूचित जनजाती का प्रतिशत 16.2 इतना है जो 3 प्रतिशत से जादा है।

बिजसंज्ञा– *आदिवासी जनजाती अनुसुचित जाती, जमाती,, संप्रदाय, धर्म, शशा. लिंगगूणोत्तर, साक्षरता*

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत संशोधकिय अध्ययन के लिये महाराष्ट्र के पूर्वी सीमा पर स्थित गोंदिया जिले का चयन किया गया है। 1 मे 1999 मे भंडारा जिले के विभाजन से गोंदिया जिल्हे का निर्माण किया गया। जिले के पूर्व मे राजनांदगाव (छत्तीसगढ) पश्चिम मे भंडारा, उत्तर मे बालाघाट (मध्यप्रदेश) दक्षिण मे गडचिरोली जिला स्थित है। इस जिले की समुद्र स्तह से सरासरी उचाई 311.38 मीटर है। जिले का प्रशासकीय मुख्य स्थन गोंदिया है। जो राज्य की राजधानी से 1006 चे किलोमीटर दूरी पर है उपराजधानी नागपुर 169 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। मुंबई कोलकत्ता राष्ट्रीय महामार्ग पर है जिले मे कुल आठ तहसील है जिसमे गोंदिया तिरोडा गोरेगाव आमगाव सालेकसा देवरी सडक अर्जुनी अर्जूनी मोरगाव इनका समावेश है। जिले का अक्षवृत्तीय विस्तार 20^0 40′ से 29^0 38′ उत्तर से होकर रेखावृत्तीय विस्तार 79^{0}° 47′ से 80^{0}° 42′ पूर्व के दरम्यान विस्तारित है।

2011 की जनगणना के अनुसार नवनिर्मित गोंदिया जिले की कुल जनसंख्या 1322507 इसमे पुरुष जनसंख्या 661,554 एंव स्त्री जनसंख्या 660953 इतनी है। जिले के कुल जनसंख्या मे ग्रामीण क्षेत्र मे 1096577 (82 92%) एंवम नगरीय क्षेत्र मे 225930 (17.08%) जनसंख्या वास्तवित है। अध्ययन क्षेत्र में आदिवासियों को दो वर्गों में अधिसूचित किया गया है– अनुसूचित जनजाति और अनुसूचित आदिम जनजाति।

अध्ययन का उद्देश

1. गोंदिया जिले की कुल जनसंख्या मे मागासवर्गीय जनसंख्या का चिकित्सक अध्ययन करना।
2. मागासवर्गीय जनसंख्या का तालुकानिहाय वितरण का अध्ययन कर उनके जीवनस्तर का भौगोलिक अवलोकन करना।
3. आदिवासी बहुल क्षेत्र मे मागासवर्गीय जाती एंव जनजाति की जनसंख्या की समस्या का अध्ययन करना।
4. अध्ययन क्षेत्र में स्थित जनजातीय जनसंख्या की वर्तमान स्थिति और उनके विकास का अध्ययन करना।

संशोधन पद्धति एवं जानकारी के स्त्रोत

प्रस्तुत संशोधन लेख कों तैयार करने के लिए मुख्य रूप से जानकारी के द्वितीय स्त्रोत का उपयोग किया गया है। जिसमें मूलतः जिला सामाजिक आर्थिक समालोचन तथा मागासवर्गीय जनसंख्या के संदर्भ में विकिपीडिया पर प्रकाशित जानकारी को पढ़कर उसके अध्ययन तथा विश्लेषण का आधार लिया गया है।

प्रस्तावना

जनसंख्या भूगोल मे मुख्यत; जनसंख्याा के क्षेत्रीय वितरण एंव प्रादेशिक विविधता का अध्ययन किया जाता है। किसी भी क्षेत्र कि कुल जनसंख्या में लिंग अनुपात, धर्म, जात,

भाषा, साक्षरता, जन्मदर, एंव मृत्युदर जैसे कारकोंका विश्लेषणात्मक अध्ययन अपेक्षित होता है। अध्ययन क्षेत्र के सभी तालुका मे आदिवासी जाती एंव जनजाती की जनसंख्या दिखाई देती है। आदिवासीयो मे हमे भोगोलिक वांशिक भाषिक आर्थिक सामाजिक व सांस्कृतिक भिन्नता दिखाई देती है, इसलिये गोंदिया के आदिवासी का अध्ययन करना होतो भौगोलिक वांशिक, भाषिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, आधार पर विचार करने की आवश्यकता है। कही तो जनजातियों के जीवन और उनकी समस्या की जानकारी हासील नही हो सकी। जनजातियों मे कुल का विशेष महत्व सुरू से ही आदिवासियों को इस्मे श्रद्धा है। उनका कहना है की आदिवासियों के कलो की उत्पत्ति एक काल्पनिक पूर्वजो के द्वारा हुई है, सजीव, निर्जीव वस्तू को कूल का प्रतीक मानते आ रहे है। किसी भी भौतिक वस्तू, पशुपक्षी, अथवा नैसर्गिक वस्तू जिसने अपने गोत्र का गुढ संबंध प्रस्थापित होता है। मानवजाती के विकास के क्रम में हर जाति, संप्रदाय, धर्म, वर्ग के लोग किसी ना किसी समूह से ही विकसित हुए हैं। यानी सभी जाति, धर्म के लोग आदिवासी जीवनक्र से आऐ हैं। भुतकाल है कि सबसे पहले आदिवासी से सभ्य नागरिक बनने के प्रमाण सिंधु घाटी सभ्यता से मिले हैं और यह भी सिद्ध हो चुका है कि सिंधु घाटी सभ्यता यहां के मूल निवासियों और जनजातियों की एक विकसित शहरी सभ्यता थी। वर्तमान मे तथाकथित समाज में जनजातियों को एक अलग स्वरूप में देखा जाता है। भले ही इन जनजातियों ने विकास की पहली किरण सबसे पहले देखी। दुनिया को विकसित सभ्यताएं दीं। भाषा–संस्कृति के मामले में भी बहुत आगे रहीं। लेकिन, आज भी भारत की जनजातियों को आदिवासी कहा जाता है। – (कातुलकर 2018)।

वर्तमान में गोंदिया जिले की आदिवासी समाज की कला संगीत लोक नृत्य आणि आधुनिकता का प्रभाव दिखाई देता है, फिर भी सामाजिक धार्मिक सांस्कृतिक परंपरा व संवर्धन करना है। उनके जीवन के लिए अविभाज्य अंग अत्यंत महत्त्वपूर्ण है ऐसा धीरे धीरे दिखाई दे रहा है इस प्रकार गोंदिया जिले के आदिवासियों के विकास के लिये विविध योजना हे सामाजकल्यान विभाग द्वारा कार्यान्वित की जाती है, किन्तु पहाडो जंगल मे रहने वाले आदिवासी समाज अपने ही सुविधा ओंसे वंचित है। आदिवासी समाज के लोग इस योजना का पुरा लाभ नही उठा पा रहे है योजना ऊन आदिवासियों के पास जाते हुए बीच मे ही खत्म हो जा रही है। सरकार के द्वारा घोषित जंगल, जमीन सुविधा एंव परिणामतः स्वतंत्रता के इतने साल बितने के बावजूद भी आदिवासियों की जिले मे स्थिति बहुत खराब दिखाई दे रही है। स्थानिक प्रशासन द्वारा आदिवासियों को शिक्षा के लिए जो सुविधाऐ दि जा रही है उसका कूछ हद तक ही आदिवासी फायदा ले पा रहे है जिसके चलते जिले के आदिवासी जनसंख्या के विकास मे औरोध पैदा हा रहे। उपयुक्त अध्ययन से स्पष्ट होता है, की इस जिले के आदिवासी समाज का स्वरूप अगर हम कल आज और कल के बीज तुलनात्मक अध्ययन करेंगे तो ज्यादा प्रगतिशील नही दिख रहा है, समाज का छोटा वर्ग सरकार के द्वारा दिये गये सुविधा का उपयोग कर रहे है, शिक्षा का प्रसार तो हुआ किंतु बहुत कम लोग हि पढकर उचे पदपर जा पा रहे है तो क्या इस से हम विकास कहेंगे आधुनिक परिवेश मे डालने के लिये तो पूर्ण आधुनिक उसका और न पूर्ण अपणा विकास कर सके। राजनितिक पार्टीयॉ इनंका बहुमत प्राप्त करने के लिए उपयोग कर रही है, तो निश्चित इनका विकास नही है हिंदूकरण संस्कृतीकरण और क्रिश्चन करण से आदिवासी समाज मे सामाजिक गतिशीलता तो मिली परंतु उसका विकास नही हो पाया आदिवासी समाज मे सामाजिक गतिशीलता के परिणाम स्वरूप आदिवासी लोगो के वेशभूषा मे तथा संस्कृती मे परिवर्तन हुआ है। आदिवासी जनसंख्या स्थानांतरीत खेती करते थे, वे अब स्थायी खेती करने लगे है तथा आदिवासी बच्चे शिक्षा ग्रहण करने लगे है, जिसे धीरे धीरे आदिवासी के नीतिमूल्य रूढी परंपरा में परिवर्तन हो रहा है।

जनसंख्या घनत्व

2011 की जनगणनाकेनुसार गोंदिया जिले में 1000 पुरुषों के पीछे स्त्रियों की संख्या 999 इतनी है यहां प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में 1001 एवं शहरी क्षेत्रों में 988 इतना है ग्रामीण क्षेत्र में देवरी तालुका अंतर्गत यह प्रमाण सबसे ज्यादा याने 1021 तो तिरोडा तालुका में सबसे कम 982 कितना है अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या घनत्व प्रति चौ किलोमीटर में 253 इतना है ग्रामीण क्षेत्रों में गोंदिया तालुका में सबसे अधिक 422 प्रति चौ किलोमीटर है तो देवरी तालुका में सबसे कम 97 प्रति चौ किलोमीटर इतना है जिले में 85 % जनसंख्या साक्षर है जिले में साक्षरता का प्रमाण पुरुष एवं स्त्रियों का प्रतिशत अनुक्रम 92 प्रतिशत और 77.9 प्रतिशत है जिसमें नागरि क्षेत्र में 91.5 प्रतिशत एवं ग्रामीण क्षेत्र में एक 83.6 प्रतिशत साक्षरता दिखाई देती है

जिले में अनुसूचित जाति व जनजाति की जनसंख्या

2011 की जनगणना अनुसार गोंदिया जिले में अनुसूचित जाति की जनसंख्या 13.3 प्रतिशत एवं अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या 16.2 प्रतिशत इतनी है आदिवासी शब्द दो शब्दों आदि और वासी से मिलकर बना है आदिका शाब्दिक अर्थ प्रारंभ या शुरू होता है यंव वासी शब्द का अर्थ निवास करने वाला होता है अर्थात जो प्रारंभ से इस क्षेत्र या इस प्रदेश में शुरुआत से ही निवास करता हो अर्थात उन्हें अनुसूचित जाती एंव जनजाती या मूलनिवासी कहा जाता है

अध्ययन क्षेत्र के अनुसूचित जाति एवं जनजाति के लिए अपनायेजाने वाले मानदंड

- ✓ विशिष्ट सांस्कृतिक वारसा
- ✓ आदिम जमात के लक्षणों के संकेत
- ✓ भौगोलिक एकाकीपन
- ✓ जनसमुदाय के साथ स्वेच्छासे से संपर्क में हिचखिचाहट एवं पिछड़ापन

यह अनुसूचित जाति एंव जनजाति की जनसंख्या कि महत्वपूर्ण पहचान है

जानकारी का विश्लेषण

(तालिका क 1.1)

मागासवर्गिय जनसंख्या संदर्भ वर्ष–2011

अ. क	तहसील	अनूसूचित जाती			अनूसूचित जनजाती			मागासवर्गिय जनसंख्या का कूल जनसंख्या में प्रतिशत	
		एकूण	पुरूष	स्त्री	एकूण	पुरूष	स्त्री	अनूसूचित जाती	अनूसूचित जनजाती
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
01	तिरोडा	22254	11042	11212	14381	7281	7100	12.6	8.2
02	गेरेगांव	15139	7466	7673	18847	9296	9551	12.1	15.1
03	गेंदिया	61562	30407	31155	34152	16846	17306	14.6	8.1
04	आमगांव	12703	6230	6473	9831	4844	4987	9.7	7.5
05	सालेकसा	6747	3337	3410	23990	11769	12221	7.4	26.5
06	स/अर्जुनी	16700	8341	8359	23973	11896	12077	14.5	20.7
07	अ/मोरगांव	27274	13760	13514	33201	16629	16572	18.4	22.3
08	देवरी	13582	6851	16731	55878	27383	28495	11.9	48.8
एकुण		**175961** 100 %	**87434** 49.69%	**88527** 50.31%	**214253** 100%	**105944** 49.45 %	**108309** 50.55 %	**13.3 %**	**16.2 %**

स्त्रोत–महानिबंधक व जनगणना आयूक्त कार्यालय.

उपरोक्त तालिका क्रमांक 1.1 मे दिए गए आकडो से यह स्पष्ट होता है की, गोंदिया जिले में कुल अनुसूचित जाती की जनसंख्या 175961 है जिसमे 49.69 प्रतिशत पुरुषो की तो 50.31 प्रतिशत महिला की जनसंख्या है। इसी प्रकार अनुसूचित जनजाति की कुल जनसंख्या 214253 है जहा पुरुषों की जनसंख्या का प्रतिशत 49.45 तो स्त्री जनसंख्या का प्रतिशत 50.55 इतना है। जिले के कुल जनसंख्या मे मागासवर्गीय जाती की जनसंख्या का प्रतिशत यह 13.3 तथा अनुसूचित जनजाती का प्रतिशत 16.2 इतना है जो 3 प्रतिशत से जादा है।

अध्ययन क्षेत्र के गोंदिया तालुका में सर्वाधिक 615 62 35 प्रतिशत अनुसूचित जाति की जनसंख्या निवास कर रही है तो सबसे कम सालेकासा तालुका में केवल 6747 3.83 प्रतिशत है इसी प्रकार अनुसूचित जनजाति की सर्वाधिक जनसंख्या जिले के अतिदुर्गम एवं मागास क्षेत्र में स्थित देवरी तालुका में 5587 8 26.08 प्रतिशत तो सबसे कम आमगांव तालुका में 9831 4.59 प्रतिशत दिखाई दे रही है इस आंकड़ेवारी से यह स्पष्ट होता है कि गोंदिया जिले में अनुसूचित जाति की जनसंख्या शहरी क्षेत्र में वास्तव्य कर रही है तो अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या यह ग्रामीणों और अति दुर्गम क्षेत्र में वास्तव्य कर रही है इस अध्ययन से यह तात्पर्य निकलता है कि जिले की अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के वास्तव में प्रादेशिक भिन्नता क्यों दिखाई दे रही है इसका भौगोलिक अध्ययन करने से यह चिकित्सक अनुमान लगाया जा सकता है कि अनुसूचित जाति कि तुलना में अनुसूचित जनजाति के अंतर्गत आने वाली जनसंख्या के जीवन स्तर मे पिछडापण दिखाई देता है

समस्या के समाधान हेतु सुझाव

1. आज आवश्यकता इस बात की है कि एक तरफ तो प्रशासन जनजातियों भावनाओं और आकांक्षाओं के प्रति उदार दृष्टिकोण अपनाए और दूसरी तरफ विकास योजनाओं को यथार्थवादी, सामंजस्य पर आधारित और परिणामोन्मुखी बनाया जाए ताकि जनजातीय कल्याण को ही जनजातीय विकास का लक्ष्य मानते हुए उनके जीवन में परिवर्तन लाया जा सके।
2. वर्तमान विकास प्रक्रियाओं में आदिवासियों को निर्वासन और निर्धनता की स्थिति में ला दिया है। इसमें परिवर्तन लाना आवश्यक है, इसलिए प्रत्येक वन–विभाग और औद्योगिक परियोजना का यह उत्तरदायित्व होना चाहिए, कि विस्थापित आदिवासियों को पुनर्स्थापित किया जाए।
3. जनजातियों में अंधविश्वास और से और जादूटोने की परंपराओं के कारण शिक्षा और सुधार का प्रयः विरोध किया जाता है। अतः उनके विकास के लिए उनके सोचने विचारने के ढंग और जीवन पद्धति में भी बदलाव लाना जरूरी है।
4. इसके साथ ही शिक्षित जनजातीय युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराने का उत्तरदायित्व भी पूर्ण किया जाना चाहिए अन्यथा एक तरफ से जनजातीय समुदाय शिक्षा से विमुक्त होंगे वहीं दूसरी तरफ शिक्षित आदिवासी औरअसंतुश्टोका का नेतृत्व कर जनजाति आक्रोश को राजनीति असंतोष और आक्रोश में परिवर्तित कर पृथकताबाद में परिनिात करेंगे और इससे राष्ट्रीय एकीकरण के लिए संकट उत्पन्न हो सकता है।

5. शिक्षित जनजातीय नवयुवकों को वैज्ञानिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
6. साथ ही उचित प्रकार से प्रशिक्षित व उदार सरकारी अधिकारियों को ही जनजातीय क्षेत्रों में नियुक्त किया जाना चाहिए, क्योंकि प्रायःजनजातीय क्षेत्रो में शोषण और ज्यादतीयों का मुख्य सरकारी अभिक्रम और कर्मचारी ही कसे जाते है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत संशोधकिय लेख के अंतर्गत महाराष्ट्र के गाोदिया जिले के अनुसुचित जाती एंव जनजाती की संरचना तथा तालुकानिहाय वितरन का अध्ययन किया गया है। जिसके अध्ययन अंती निम्नाकिंत निष्कर्ष प्राप्त हुय है। जिले के गोंदिया तालुका में सर्वाधिक 615 62 35 प्रतिशत अनुसूचित जाति की जनसंख्या निवास कर रही है तो सबसे कम सालेकासा तालुका में केवल 6747 3.83 प्रतिशत है इसी प्रकार अनुसूचित जनजाति की सर्वाधिक जनसंख्या जिले के अतिदुर्गम एवं मागास क्षेत्र में स्थित देवरी तालुका में 5587 8 26.08 प्रतिशत तो सबसे कम आमगांव तालुका में 9831 4.59 प्रतिशत दिखाई दे रही है इस आंकड़ेवारी से यह स्पष्ट होता है कि गोंदिया जिले में अनुसूचित जाति की जनसंख्या शहरी क्षेत्र में वास्तव्य कर रही है तो अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या यह ग्रामीणों और अति दुर्गम क्षेत्र में वास्तव्य कर रही है इस अध्ययन से यह तात्पर्य निकलता है कि जिले की अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के वास्तव में प्रादेशिक भिन्नता क्यों दिखाई दे रही है इसका भौगोलिक अध्ययन करने से यह चिकित्सक अनुमान लगाया जा सकता है कि अनुसूचित जाति कि तुलना में अनुसूचित जनजाति के अंतर्गत आने वाली जनसंख्या के जीवन स्तर मे पिछडापण दिखाई देता है ईस आदिवासी जनसंख्या के सर्वागिंन विकास एंव उत्थान के लिये सतकार दवारा कारगर प्रयास होने कि आव" यकता है।

संदर्भ

1. *कंगाली, मोती रावण. 2011. गोंडवाना का सांस्कृतिक इतिहास.*
2. *कातुलकर, रत्नेश. 2018. बाबा साहेब डॉ. आंबेडकर और आदिवासी, सम्यक प्रकाशन पूरी, नई दिल्ली –1100.*
3. *खर्टे, अजय. 2018. "आदिवासी कौन हैं Dr. Ajay Kharte*
4. *जिल्हा सामाजिक आर्थिक समालोचन– 2020 गोंदिया जिल्हा अर्थ एंव सांख्यिकी संचालनालय, महाराष्ट्र शासन मुंबई*
5. *Ministry of Tribal Affairs Government of India Annual report 2019 & 2020*
6. *National Commission for Scheduled Tribals*
7. *https://jaykharte-blogspot com/2018/03/blog&post-html-*
8. *Kulkarni Dr. S, Population and Education Vidya Publication Nagpur 2019*
9. *https://tribal-nic-in/hindi/india*